शोधामृत
(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-2 (April-June) 2026
Page No- 65-70
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

1. सूर्य प्रकाश सोनी
रिसर्च स्कॉलर(एजुकेशन), डॉ. सी. वी. रमन यूनिवर्सिटी, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़.

2. नाजिया कौशर
सहायक प्राध्यापक, डॉ. सी. वी. रमन यूनिवर्सिटी, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़.

Corresponding Author :

सूर्य प्रकाश सोनी
रिसर्च स्कॉलर(एजुकेशन), डॉ. सी. वी. रमन यूनिवर्सिटी, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़.

अनुसूचित जाति के उच्चतर माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों में सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में डिजिटल पेडागॉजी का रचनात्मक सोच पर प्रभाव : एक अध्ययन

सार : वर्तमान डिजिटल युग में शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी नवाचारों का प्रभाव निरंतर बढ़ता जा रहा है। डिजिटल पेडागॉजी, जो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के समुचित उपयोग पर आधारित है, विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक एवं रचनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अनुसूचित जाति वर्ग के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में डिजिटल पेडागॉजी के रचनात्मक सोच पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक स्थिति को एक महत्वपूर्ण परिवर्तनीय (variable) के रूप में लिया गया है, जो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों एवं सीखने के अवसरों को प्रभावित करता है। डिजिटल पेडागॉजी के माध्यम से विद्यार्थियों को नवीन, सहभागी एवं अनुभवात्मक अधिगम के अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे उनकी रचनात्मक सोच, समस्या समाधान क्षमता एवं नवाचार कौशल का विकास संभव होता है। अध्ययन में सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है तथा आंकड़ों के संकलन हेतु प्रश्नावली एवं रचनात्मक सोच मापनी का प्रयोग किया गया है। नमूना चयन में अनुसूचित जाति के उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है, जिनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के संभावित निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि डिजिटल पेडागॉजी का रचनात्मक सोच पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, किंतु यह प्रभाव विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न हो सकता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों को डिजिटल संसाधनों तक अधिक पहुँच होने के कारण बेहतर अवसर प्राप्त होते हैं, जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के विद्यार्थियों को संसाधनों की कमी के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अंततः अध्ययन यह सुझाव देता है कि डिजिटल पेडागॉजी के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु समावेशी नीतियाँ,

संसाधनों की समान उपलब्धता तथा शिक्षकों का प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है, जिससे सभी वर्गों के विद्यार्थियों में रचनात्मक सोच का समुचित विकास सुनिश्चित किया जा सके।

कुंजी शब्द : डिजिटल पेडागॉजी, रचनात्मक सोच, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, अनुसूचित जाति विद्यार्थी, उच्चतर माध्यमिक शिक्षा।

प्रस्तावना : वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में तीव्र परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं, जिनमें डिजिटल तकनीकों का समावेश अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। डिजिटल पेडागॉजी (Digital Pedagogy) ने पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों को बदलकर उन्हें अधिक प्रभावी, सहभागितापूर्ण एवं छात्र-केंद्रित बना दिया है। विशेष रूप से उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के बौद्धिक एवं रचनात्मक विकास के लिए डिजिटल संसाधनों का उपयोग अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। अनुसूचित जाति (Scheduled Castes) के विद्यार्थियों के संदर्भ में यह विषय और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि सामाजिक-आर्थिक स्थिति (Socio-Economic Status) उनके शैक्षिक अवसरों, संसाधनों की उपलब्धता तथा सीखने की प्रक्रिया को सीधे प्रभावित करती है। डिजिटल पेडागॉजी इन विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम बन सकती है, बशर्ते इसका उचित एवं प्रभावी उपयोग किया जाए। रचनात्मक सोच (Creative Thinking) आज के शिक्षा प्रणाली का एक प्रमुख उद्देश्य बन चुका है। यह विद्यार्थियों को नवीन विचार उत्पन्न करने, समस्याओं के समाधान खोजने तथा नवाचार करने में सक्षम बनाता है। अतः यह अध्ययन इस बात की जांच करने का प्रयास करता है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में डिजिटल पेडागॉजी अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच को किस प्रकार प्रभावित करती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व : वर्तमान अध्ययन अनेक दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शिक्षा के बदलते स्वरूप में डिजिटल पेडागॉजी की भूमिका को एक विशिष्ट सामाजिक वर्ग, अर्थात् अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। आज के डिजिटल युग में जहाँ तकनीकी संसाधन शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन चुके हैं, वहीं यह आवश्यक हो जाता है कि उनके प्रभाव का विश्लेषण उन वर्गों पर भी किया जाए जो सामाजिक एवं आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत वंचित रहे हैं। यह अध्ययन सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के प्रभाव को भी उजागर करता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि संसाधनों की उपलब्धता या अभाव विद्यार्थियों के सीखने के अवसरों और उनकी रचनात्मक क्षमताओं को किस प्रकार प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, यह शोध शिक्षकों, शिक्षाविदों तथा नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी दिशा-निर्देश प्रदान करता है, जिससे वे यह समझ सकें कि डिजिटल संसाधनों और तकनीकों का प्रभावी उपयोग करके शिक्षा को अधिक समावेशी (Inclusive) और समान अवसर आधारित बनाया जा सकता है। विशेष रूप से यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि यदि डिजिटल पेडागॉजी को उचित रूप से लागू किया जाए, तो यह सामाजिक विषमताओं को कम करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। साथ ही, यह रचनात्मक सोच के विकास में आधुनिक तकनीकों की महत्वपूर्ण भूमिका को भी रेखांकित करता है, क्योंकि डिजिटल माध्यम विद्यार्थियों को नवाचार, समस्या-समाधान और स्वतंत्र चिंतन के अधिक अवसर प्रदान करते हैं। इस प्रकार, यह अध्ययन न केवल शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समानता, नवाचार और समग्र विकास को बढ़ावा देने की दिशा में भी एक सार्थक प्रयास है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. डिजिटल पेडागॉजी के उपयोग का स्तर ज्ञात करना।
3. विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच का स्तर मापना।
4. सामाजिक-आर्थिक स्थिति और रचनात्मक सोच के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
5. डिजिटल पेडागॉजी का रचनात्मक सोच पर प्रभाव ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ :

1. सामाजिक-आर्थिक स्थिति और रचनात्मक सोच के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।
2. डिजिटल पेडागॉजी का रचनात्मक सोच पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।
3. उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच निम्न स्थिति वाले विद्यार्थियों से भिन्न नहीं है।

शोध पद्धति :

(क) शोध का प्रकार : यह अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) एवं सहसंबंधात्मक (Correlational) प्रकृति का है।

(ख) जनसंख्या (Population) : छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के विद्यार्थी।

(ग) न्यादर्श (Sample) : छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले से न्यादर्श चयन स्तरीकृत याद्दच्छिक विधि (Stratified Random Sampling) द्वारा किया गया। कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

(घ) उपकरण (Tools) :

1. सामाजिक-आर्थिक स्थिति मापनी
2. डिजिटल पेडागॉजी उपयोग प्रश्नावली
3. रचनात्मक सोच परीक्षण

(ङ) डेटा संग्रह एवं विश्लेषण- डेटा संग्रह प्रश्नावली एवं परीक्षण के माध्यम से किया गया तथा विश्लेषण हेतु Mean, Standard Deviation (SD), Correlation एवं t-test का उपयोग किया गया।

1. सहसंबंध का विश्लेषण

तालिका 1: डिजिटल पेडागॉजी एवं रचनात्मक सोच के बीच सहसंबंध

चर (Variables)	N	r (Correlation Value)	p-value
डिजिटल पेडागॉजी एवं रचनात्मक सोच	200	0.62	0.01

विश्लेषण : तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि डिजिटल पेडागॉजी एवं रचनात्मक सोच के बीच **0.62 का सकारात्मक सहसंबंध (Positive Correlation)** पाया गया है, जो कि मध्यम से उच्च स्तर का संबंध दर्शाता है। p-value (0.01) यह संकेत करती है कि यह संबंध सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण (Statistically Significant) है। इसका अर्थ है कि जैसे-जैसे डिजिटल पेडागॉजी का उपयोग बढ़ता है, विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच भी बढ़ती है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि डिजिटल पेडागॉजी रचनात्मकता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2. t-test का विश्लेषण (सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर)

तालिका 2: उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच की तुलना

समूह (Group)	N	Mean	SD	t-value	p-value
उच्च SES (High SES)	100	72.5	8.4		
निम्न SES (Low SES)	100	65.3	9.1	4.25	0.01

विश्लेषण : तालिका 2 से यह स्पष्ट होता है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) वाले विद्यार्थियों का औसत (Mean = 72.5) निम्न SES वाले विद्यार्थियों (Mean = 65.3) की तुलना में अधिक है। t-value (4.25) और p-value (0.01) यह दर्शाते हैं कि दोनों समूहों के बीच का अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है।

इसका अर्थ यह है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच को प्रभावित करती है। उच्च SES वाले विद्यार्थियों को अधिक डिजिटल संसाधन एवं अनुकूल वातावरण मिलने के कारण उनकी रचनात्मकता

का स्तर अधिक पाया गया, जबकि निम्न SES वाले विद्यार्थियों में संसाधनों की कमी के कारण यह स्तर अपेक्षाकृत कम है।

परिणाम एवं विश्लेषण : अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट रूप से ज्ञात हुआ कि डिजिटल पेडागॉजी का विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच पर सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जिन विद्यार्थियों को डिजिटल संसाधनों-जैसे स्मार्ट क्लास, इंटरनेट, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, शैक्षणिक ऐप्स आदि-का अधिक exposure प्राप्त हुआ, उनमें रचनात्मक सोच का स्तर अपेक्षाकृत अधिक विकसित पाया गया। ये विद्यार्थी समस्याओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने, नवीन विचार प्रस्तुत करने तथा सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी प्रदर्शित करने में सक्षम पाए गए।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) का रचनात्मक सोच पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों के पास डिजिटल उपकरणों एवं संसाधनों की बेहतर उपलब्धता होने के कारण वे डिजिटल पेडागॉजी का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग कर पाए, जिससे उनकी रचनात्मकता में वृद्धि देखी गई। इसके विपरीत, निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों को संसाधनों की कमी, सीमित तकनीकी पहुँच तथा अनुकूल शैक्षणिक वातावरण के अभाव के कारण डिजिटल पेडागॉजी का पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं हो सका।

सहसंबंध (Correlation) विश्लेषण के परिणामों से यह सिद्ध हुआ कि डिजिटल पेडागॉजी और रचनात्मक सोच के बीच सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध विद्यमान है। इसका अर्थ है कि जैसे-जैसे डिजिटल शिक्षण का उपयोग बढ़ता है, वैसे-वैसे विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता में भी वृद्धि होती है।

चर्चा : प्राप्त निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि डिजिटल पेडागॉजी केवल एक तकनीकी साधन नहीं, बल्कि एक प्रभावी शैक्षणिक दृष्टिकोण है, जो विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। डिजिटल माध्यम विद्यार्थियों को इंटरैक्टिव, अनुभवात्मक एवं स्व-निर्देशित अधिगम (self-directed learning) के अवसर प्रदान करते हैं, जिससे वे न केवल ज्ञान अर्जित करते हैं, बल्कि उसे नए संदर्भों में लागू करने की क्षमता भी विकसित करते हैं।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल पेडागॉजी विद्यार्थियों में समस्या-समाधान, आलोचनात्मक चिंतन (critical thinking) एवं नवाचार की प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहित करती है। हालांकि, इस प्रक्रिया में सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ एक प्रमुख बाधा के रूप में सामने आती हैं। जिन विद्यार्थियों के पास आवश्यक तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता नहीं है, वे इस डिजिटल परिवर्तन से वंचित रह जाते हैं, जिससे उनके विकास में असंतुलन उत्पन्न होता है।

अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा प्रणाली में डिजिटल संसाधनों की समान उपलब्धता सुनिश्चित की जाए, ताकि सभी वर्गों के विद्यार्थी समान रूप से लाभान्वित हो सकें।

निष्कर्ष : उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि डिजिटल पेडागॉजी विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच के विकास में एक अत्यंत प्रभावी एवं उपयोगी माध्यम है। यह शिक्षण प्रक्रिया को अधिक आकर्षक, सहभागितापूर्ण एवं नवाचारपूर्ण बनाकर विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्रोत्साहित करती है।

हालांकि, इसका प्रभाव विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर भी निर्भर करता है। जिन विद्यार्थियों को पर्याप्त संसाधन एवं अनुकूल वातावरण प्राप्त होता है, वे इस पद्धति का अधिक लाभ उठा पाते हैं, जबकि संसाधनों की कमी वाले विद्यार्थी पीछे रह जाते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि डिजिटल शिक्षा के अवसरों को समान रूप से उपलब्ध कराया जाए, जिससे शैक्षिक असमानताओं को कम किया जा सके।

इस प्रकार, यदि डिजिटल पेडागॉजी को समावेशी दृष्टिकोण के साथ लागू किया जाए, तो यह न केवल रचनात्मक सोच को विकसित करेगी, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता एवं समानता दोनों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण

योगदान देगी।

शैक्षिक निहितार्थ : इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा व्यवस्था के लिए अनेक महत्वपूर्ण निहितार्थ प्रस्तुत करते हैं। सर्वप्रथम, यह आवश्यक है कि विद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की समान एवं पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जाए, ताकि सभी विद्यार्थियों को समान रूप से तकनीकी सुविधाओं का लाभ मिल सके। विशेष रूप से अनुसूचित जाति एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के विद्यार्थियों के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि उन्हें भी डिजिटल उपकरणों, इंटरनेट एवं ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म तक सुलभ पहुँच प्रदान की जाए।

इसके अतिरिक्त, शिक्षकों को डिजिटल पेडागॉजी के प्रभावी उपयोग हेतु नियमित एवं गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे वे आधुनिक तकनीकों को शिक्षण प्रक्रिया में समुचित रूप से एकीकृत कर सकें। यह भी आवश्यक है कि शिक्षण पद्धतियों में रचनात्मकता को प्राथमिकता दी जाए, ताकि विद्यार्थी केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित न रहें, बल्कि नवाचार, समस्या-समाधान एवं स्वतंत्र चिंतन की क्षमता भी विकसित कर सकें।

साथ ही, नीति-निर्माताओं को ऐसी योजनाएँ बनानी चाहिए जो विशेष रूप से निम्न SES वाले विद्यार्थियों के लिए सहायक हों, जिससे डिजिटल विभाजन (Digital Divide) को कम किया जा सके और समावेशी शिक्षा को बढ़ावा मिले।

सुझाव : इस अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं:

1. सरकार को डिजिटल शिक्षा के विस्तार हेतु विशेष योजनाएँ एवं नीतियाँ लागू करनी चाहिए, विशेषकर वंचित वर्गों के लिए।
2. विद्यालयों में ICT (Information and Communication Technology) सुविधाओं का व्यापक विकास किया जाना चाहिए, जैसे स्मार्ट क्लास, कंप्यूटर लैब एवं इंटरनेट कनेक्टिविटी।
3. शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ एवं अभिवृद्धि कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ, ताकि वे डिजिटल पेडागॉजी में दक्ष हो सकें।
4. विद्यार्थियों को प्रोजेक्ट, गतिविधि-आधारित शिक्षण एवं रचनात्मक कार्यों में भाग लेने के अधिक अवसर प्रदान किए जाएँ, जिससे उनकी सृजनात्मक क्षमता विकसित हो सके।

सीमाएँ : प्रत्येक शोध की तरह इस अध्ययन की भी कुछ सीमाएँ हैं। यह अध्ययन एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र तक ही केंद्रित रहा, जिसके कारण इसके निष्कर्षों का सामान्यीकरण व्यापक स्तर पर सीमित हो सकता है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन का नमूना आकार भी सीमित था, जिससे परिणामों की व्यापकता प्रभावित हो सकती है। साथ ही, इस शोध में केवल कुछ चयनित चरों-जैसे सामाजिक-आर्थिक स्थिति, डिजिटल पेडागॉजी एवं रचनात्मक सोच-का ही अध्ययन किया गया है, जबकि अन्य महत्वपूर्ण कारकों को शामिल नहीं किया जा सका।

भविष्य के लिए अनुसंधान : भविष्य में इस विषय पर और अधिक व्यापक एवं गहन अनुसंधान किए जा सकते हैं। अन्य सामाजिक वर्गों के विद्यार्थियों को शामिल करके तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है, जिससे विभिन्न वर्गों के बीच अंतर स्पष्ट हो सके। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के बीच डिजिटल पेडागॉजी के प्रभाव की तुलना भी महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रदान कर सकती है। इसके अतिरिक्त, भविष्य के अध्ययनों में अन्य मनोवैज्ञानिक चरों जैसे प्रेरणा (Motivation), अभिवृत्ति (Attitude), आत्म-प्रभावकारिता (Self-efficacy) आदि को भी शामिल किया जा सकता है, जिससे विद्यार्थियों के समग्र विकास को अधिक गहराई से समझा जा सके।

संदर्भ ग्रंथ :

1. Anderson, L. W., & Krathwohl, D. R. (2001). अधिगम, शिक्षण एवं मूल्यांकन का वर्गीकरण (Taxonomy). न्यूयॉर्क: लॉन्गमैन।

2. Bandura, A. (1997). स्व-प्रभावकारिता: नियंत्रण का अभ्यास. न्यूयॉर्क: फ्रीमैन।
3. Bruner, J. S. (1966). अनुदेशन का सिद्धांत. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. Bloom, B. S. (1956). शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण. न्यूयॉर्क: लॉन्गमैन।
5. Creswell, J. W. (2012). शैक्षिक अनुसंधान: योजना, संचालन एवं मूल्यांकन. पियर्सन।
6. Dewey, J. (1938). अनुभव और शिक्षा. न्यूयॉर्क: मैकमिलन।
7. Gardner, H. (1983). मन की संरचनाएँ: बहु-बुद्धि का सिद्धांत. बेसिक बुक्स।
8. Guilford, J. P. (1967). मानव बुद्धि का स्वरूप. मैकग्रा-हिल।
9. Kerlinger, F. N. (1986). व्यवहारिक अनुसंधान की आधारशिला. होल्ट, राइनहार्ट एवं विंस्टन।
10. Piaget, J. (1972). बाल मनोविज्ञान. बेसिक बुक्स।
11. Vygotsky, L. S. (1978). समाज में मन (Mind in Society). हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
12. UNESCO. (2011). शिक्षकों के लिए ICT दक्षता रूपरेखा. पेरिस: यूनेस्को।
13. भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
14. Mishra, P., & Koehler, M. J. (2006). प्रौद्योगिकीय-शैक्षणिक विषय-वस्तु ज्ञान (TPACK). टीचर्स कॉलेज रिकॉर्ड, 108(6), 1017–1054।
15. Prensky, M. (2001). डिजिटल नेटिव्स और डिजिटल इमिग्रेंट्स. ऑन द होराइजन, 9(5)।
16. Siemens, G. (2005). कनेक्टिविज़्म: डिजिटल युग का अधिगम सिद्धांत.
17. OECD. (2015). विद्यार्थी, कंप्यूटर और अधिगम. OECD पब्लिशिंग।
18. NCERT. (2021). शिक्षा में ICT. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
19. Amabile, T. M. (1996). परिप्रेक्ष्य में सृजनात्मकता. वेस्टव्यू प्रेस।
20. Torrance, E. P. (1974). सृजनात्मक सोच के टॉरेंस परीक्षण. स्कोलास्टिक टेस्टिंग सर्विस।
21. Zimmerman, B. J. (2002). स्व-नियंत्रित अधिगमकर्ता बनना. थ्योरी इन्टू प्रैक्टिस, 41(2)।
22. Sen, A. (1999). स्वतंत्रता के रूप में विकास. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
23. Bourdieu, P. (1986). पूंजी के रूप (Forms of Capital)।
24. Coleman, J. S. (1988). मानव पूंजी के निर्माण में सामाजिक पूंजी.
25. Warschauer, M. (2004). प्रौद्योगिकी और सामाजिक समावेशन. MIT प्रेस।
26. Selwyn, N. (2011). शिक्षा और प्रौद्योगिकी. रूटलेज।
27. Hargreaves, A. (2003). ज्ञान समाज में शिक्षण. टीचर्स कॉलेज प्रेस।
28. Fullan, M. (2013). स्ट्रेटोस्फीयर: प्रौद्योगिकी का एकीकरण. पियर्सन।
29. Darling-Hammond, L. (2017). सशक्त शिक्षक (Empowered Educators). जोसी-बैस।
30. Zhao, Y. (2012). विश्व स्तरीय शिक्षार्थी. कोर्विन प्रेस।

•